अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय:- "रेवतीसरन शर्मा के नाटकों की कथावस्तु का परिचय।" पृष्ठ 1 से 23

प्रस्तावना -

विवेच्य नाटकों की कथावस्तु का परिचय ।

1.1 'चिराग़ की लौं' ।

1.2 'अँधेरे का बेटा' ।

1.3 'न धर्म, न ईमान' ।

निष्कर्ष -

द्वितीय अध्याय :- "रेवतीसरन शर्मा के नाटकों में चरित्र-चित्रण।" पृष्ठ 24 से 56

विवेच्य नाटकों में चरित्र-चित्रण -

2.1 चिराग़ की लौं

2.1.1 किशोर

2.1.1.1 आदर्शवादी

2.1.1.2 ईमानदार

2.1.1.3 कर्मठ

2.1.1.4 जनता के प्रति आस्था

2.1.1.5 दायित्व का निर्वाह

2.1.1.6 बनावट और दिखावे से दूर

2.1.1.7 आत्मपीड़ित

2.1.1.8 चिराग़ की लौं

2.1.2 तारा

2.1.3 रानी

2.1.4 नसीम

2.1.5 जयंत

2.1.6 गिरीश

2.2 अँधेरे का बेटा

2.2.1 मेजर नारंग

2.2.1.1 सामान्य आदमी की तरह जीने का प्रयास

2.2.1.2 डरपोक(बुझदिल)

2.2.1.3 असलियत छिपाने का प्रयास

2.2.1.4 गलती का ऐहसास

2.2.1.5 पत्नी के कारण जीना मुश्किल

2.2.2 निरूपमा-

2.2.2.1 पति के रूप में मिलिट्री ऑफ़िसर की चाह

2.2.2.2 बहादूरी पर नाज़

2.2.2.3 हौंसला बढ़ाने का प्रयास

2.2.2.4 पति की अपेक्षा प्रमोशन को अधिक महत्त्व

2.2.2.5 शानदार मौत से खुश

निष्कर्ष -

2.3 न धर्म, न ईमान

2.3.1 दिनेश

2.3.1.1 आदर्श प्रेमी

2.3.1.2 भावुक

2.3.1.3 भविष्य के सपने देखना

2.3.1.4 पुराने विचारों का विरोध

2.3.1.5 दृढ़ निश्चयी

2.3.1.6 दादी के बर्ताव से [redacted] दुःखी

निष्कर्ष -

तृतीय अध्याय - "रेवतीसरन शर्मा के नाटकों में चित्रित समस्याएँ ।" पृष्ठ 57 से 88

प्रस्तावना -

3.1 सामाजिक समस्याएँ

3.1.1 आर्थिक समस्या

3.1.2 भ्रष्टाचार की समस्या

3.1.3 नकाबी दुनिया की समस्या

3.1.4 नि:स्वार्थी देश-सेवकों की समस्या

3.1.5 बोगस अखबार की समस्या

3.2. पारिवारिक समस्याएँ

3.2.1 असफल प्रेम की समस्या

3.2.2 प्रेम के खोखले आदर्श की समस्या

3.2.3 प्रेम विवाह की समस्या

3.2.4 अनमेल विवाह की समस्या

3.2.5 अविवाह की समस्या

3.2.6 विधवा समस्या

3.2.7 अंध:विश्वास की समस्या

3.2.8 दांपत्य प्रेम की समस्या

निष्कर्ष -

चतुर्थ अध्याय - "रेवती सरन शर्मा के नाटकों में रंगमंचीयता एवं अभिनेयता ।" पृष्ठ 89 से 129

4.1	रंगमंच सं तात्पर्य
4.2	हिंदी रंगमंच
4.2.1	आरंभिक स्थिति हिंदी
4.2.2	भारतेंदु युगीन हिंदी रंगमंच
4.2.3	प्रसाद युगीन हिंदी रंगमंच
4.2.4	प्रसादोत्तर हिंदी रंगमंच
4.3	विवेच्च नाटकों की मंचीयता
4.3.1	चिराग़ की लौं
4.3.2	अँधेरे का बेटा
4.3.3	न धर्म, न ईमान
4.3.4	निर्देशन एवं व्यवस्थापक
4.3.5	अभिनय
4.3.6	रूपसज्जा
4.3.7	दृश्यसज्जा
4.4	प्रकाशयोजना
4.4.1	रोशनी बुझाकर दृश्य समाप्ति
4.4.2	अँधेरे के साथ प्रकाश रोशनी
4.4.3	पुंजदीप प्रकाश योजना
4.4.4	रंगीन प्रकाश योजना
4.5	ध्वनि संकेत

4.5.1 डाकिया की आवाज

4.5.2 अलार्म घड़ी की आवाज

4.5.3 दस्तक की आवाज

4.5.4 वेद, मंत्र तथा मंत्रोचारण

4.5.5 दूधवाले की आवाज

4.5.6 टेलिफोन की आवाज

4.5.7 फायरिंग (गोली) की आवाज

4.5.8 जीप के रूकने की आवाज

4.5.9 टेपरिकार्डर की आवाज

4.5.10 चीखने की आवाज

4.5.11 बीजली कड़क और बादल के गरजने की आवाज

4.5.12 बुलाने की आवाज

4.6 संगीत योजना

4.7 संवाद योजना

4.7.1 पात्रानुकूल

4.7.2 भावानुकूल

4.7.3 व्यंग्यात्मक

4.7.4 अरबी-फारसी और उर्दू मिश्रित संवाद

4.8 रंगमंचीय प्रस्तुति और दर्शकीय संवेदना

निष्कर्ष -

उपसंहार - पृष्ठ 130 से 137

परिशिष्ट - रेवतीसरन शर्मा के हस्तलिखित पत्र पृष्ठ 138 से 139

संदर्भ ग्रंथसूची - पृष्ठ 140 से 143